Toppersnotes®
Unleash the topper in you

UP - PCS

प्रादेशिक प्रशासनिक सेवा

Prelims & Mains

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग, प्रयागराज

सामान्य अध्ययन

पेपर 1 – भाग 1

कला एवं संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

UP - PCS

पेपर 1 भाग 1

कला एवं संस्कृति

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**वास्तुकला** • पाषाण काल • हड़प्पा सभ्यता • गुफाएं : • मंदिर वास्तुकला • भारतीय मंदिर वास्तुकला का अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव • स्तूप स्थापत्य • गुफा वास्तुकला • महलों और किलों की वास्तुकला • इंडो इस्लामिक वास्तुकला • प्रांतीय वास्तुकला • उत्तर मुगल क्षेत्रीय वास्तुकला • मराठा वास्तुकला • औपनिवेशिक वास्तुकला • गोथिक वास्तुकला • इंडो सरसेनिक शैली • फ्रेंच शैली की वास्तुकला • नव रोमन वास्तुकला • स्वतंत्रयोत्तर वास्तुकला	1
2.	**मूर्तिकला और कलाकृतियाँ** • मूर्तिकला का विकास • कांस्य युग की मूर्ति • मौर्य पूर्व कला • मौर्य काल की कला • शुंग काल की कला (180 80 ईसा पूर्व) • गुप्त काल • मध्यकालीन, 600 ईस्वी से आगे का काल • प्रारंभिक आधुनिक काल (1206 1858) • ब्रिटिश औपनिवेशिक काल (1858 1947) • स्वतंत्रता के बाद (1947 वर्तमान) • सिंधु घाटी सभ्यता मूर्तिकला • मौर्यकालीन मूर्तिकला कला • मौर्योत्तर काल • भारतीय मूर्तिकला के स्कूल • गुप्त कालीन मूर्ति कला • पाल और चंदेल मूर्तियां • दक्षिण भारत में मूर्तियां • भारत में महत्वपूर्ण शिलालेख	49

3.	**भारत में सिक्के** • पंच मार्क या आहत चिह्नित सिक्के • इंडो यूनानी सिक्के • सातवाहन द्वारा जारी किये गये सिक्के • क्षत्रप या इंडो सीथियन • गुप्त काल के सिक्के • वर्धन राजवंश के सिक्के • चालुक्य राजाओं द्वारा जारी किए गए सिक्के • राजपूत राजवंशों द्वारा जारी किए गए सिक्के • पांडय और चोल राजवंश के सिक्के • तुर्की और दिल्ली सल्तनत के सिक्के • विजयनगर साम्राज्य के सिक्के • मुगल कालीन सिक्के	**67**
4.	**चित्रकला** • प्रागैतिहासिक चित्रकला • दक्षिण भारत • भीमबेटका • प्राचीन चित्रकला • मध्यकालीन / लघु चित्र • चित्रकला के क्षेत्रीय स्कूल • दक्षिण भारतीय शैली • लोक चित्र कला • आधुनिक काल • प्रमुख आधुनिक चित्रकार	**71**
5.	**धर्म** • हिंदू धर्म: • जैन धर्म • बौद्ध धर्म • ईसाई धर्म: • सिख धर्म: • यहूदी धर्म • पारसी धर्म • इस्लाम धर्म: • ताओ धर्म • छः नास्तिक संप्रदाय	**93**
6.	**दर्शन** • आस्तिक या रूढ़िवादी स्कूल • नास्तिक या हेटेरोडॉक्स स्कूल	**106**
7.	**भारत में भाषाएँ** • भारत के भाषायी परिवार • भारत की प्राचीन लिपियां • शास्त्रीय भाषा • भारत की आधिकारिक भाषाएं	**112**
8.	**साहित्य** • साहित्य का विकास • संस्कृत साहित्य	**119**

	• आरण्यक (वन ग्रंथ) • उपनिषद • रामायण • महाभारत: • पाली और प्राकृत साहित्य • द्रविड़ साहित्य • क्षेत्रीय साहित्य • उर्दू साहित्य • फारसी साहित्य • हिंदी साहित्य • यात्रा वृतांत • आधुनिक साहित्य • दलित साहित्य	
9.	**भारतीय संगीत** • भारतीय संगीत के घटक • भारतीय संगीत का वर्गीकरण • शास्त्रीय शैली – • हिंदुस्तानी और कर्नाटक शैली के बीच समानताएं • लोक संगीत • शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत का मिश्रण (फ्यूज़न संगीत) • संगीत में आधुनिक विकास • संगीत वाद्ययंत्र	**136**
10.	**नृत्य** • शास्त्रीय नृत्य की विभिन्न शैलियाँ • लोक नृत्य • नृत्य का महत्व	**158**
11.	**हिन्दी रंगमंच** • प्राचीन भारतीय महत्वपूर्ण नाटकशास्त्र • लोक रंगमंच	**168**
12.	**भारतीय कठपुतली कला** • धागा कठपुतली • छाया कठपुतलियां • दस्ताना कठपुतली • छड कठपुतली	**174**
13.	**विज्ञान एवं तकनीक** • वास्तुकला के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी • गणित • रसायन विज्ञान • चिकित्सा • चिकित्सा प्रणाली • खगोल	**179**
14.	**भारत में मार्शल आर्ट** • कलारिपयट्टू • सिलंबम • थांग टा और सरित सरक • चेइबी गद गा	**186**

	• परी खंडा • तोडा • गटका • मर्दानी खेल • लाठी • इनबुआन कुश्ती • कुट्टू वरिसाई • मल्लखंब • मुष्टि युद्ध	
15.	**मेले एवं त्यौहार** • महत्वपूर्ण मेले • भारत में फसल उत्सव • भारत में नए साल के त्यौहार • धर्मनिरपेक्ष त्यौहार • उत्तर पूर्व के त्यौहार • राष्ट्रीय त्यौहार	**189**
16.	**कलारूप** • टाई और डाई • हाथी दांत की नक्काशी • लकड़ी का काम • मिट्टी और मिट्टी के बर्तनों का कार्य • चमड़ा उत्पाद • खिलौने • फर्श की सजावट • रंगोली • धातु शिल्प • कांच की बनी वस्तुएँ	**195**
17.	**संस्थाएं** • UNESCO • भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण • भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद • कला और सांस्कृतिक विरासत के लिए भारतीय राष्ट्रीय ट्रस्ट (INTACH) • राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय • साहित्य अकादमी (राष्ट्रीय पत्रों की अकादमी) • संगीत नाटक अकादमी • सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र	**207**
18.	**पुरस्कार और सम्मान** • भारत रत्न • पद्म पुरस्कार • साहित्य अकादमी पुरस्कार • राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार • अन्य साहित्यिक पुरस्कार	**211**
19.	**महत्वपूर्ण व्यक्तित्व**	**216**
20.	**भारत के महत्वपूर्ण प्राचीन विश्वविद्यालय**	**221**
21.	**भारत में महत्वपूर्ण मठ**	**223**

1
CHAPTER

वास्तुकला

वास्तुकला कला और विज्ञान है जो **भवन** और **गैर-भवन संरचनाओं** के **डिजाइन** से **संबंधित** है। भारत में वास्तुकला **सिंधु घाटी सभ्यता से शुरू** हुई और मंदिरों, स्तूपों, शैल्कर्तित गुफाओं, महलों, किलों आदि जैसी विभिन्न **संरचनाओं का निर्माण** हुआ।

पाषाण काल

- भारत में **पाषाणकालीन मानवों द्वारा निर्मित** वास्तुकला का **उदाहरण नहीं** मिलता। महापाषाण काल के **लोगों द्वारा** उनके **कब्रिस्तानों** को **पत्थर** से **सजाने** का उदाहरण मिलता है।
- दक्षिण भारत में इस प्रकार **शवों** को **दफनाने** की **परम्परा लौह युग** के साथ आरंभ हुई।
- महापाषाण कालीन **दफन करने के उदाहरण** बड़ी संख्या में निम्न स्थानों जैसे **महाराष्ट्र** (नागपुर के पास) **कर्नाटक** (मास्की), **आंध्र प्रदेश** (नागार्जुनकोंडा), **तमिलनाडु** (आदिचन्नालुर) तथा **केरल** में पाये गये है।

हड़प्पा सभ्यता

- **पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार** पर, इस **संस्कृति** के फलने-फूलने की **चरम अवस्था 2100 ई.पू. से 1750 ई.पू**. के बीच अनुमानित है।
- मकानों के निर्माण में सामग्री की **उत्कृष्टता** तथा **दुर्ग**, **सभागारों**, अनाज के **गोदामों**, **कार्यशालाओं**, **छात्रावासों**, **बाजारों** आदि की **मौजूदगी** तथा **आधुनिक जल निकास प्रणाली** वाले **भव्य नगरों** के समान वैज्ञानिक **ले-आउट** देखकर यह **निष्कर्ष** निकाला जा सकता है कि उस काल की **संस्कृति** काफी **समृद्ध** थी।
- **हडप्पा** और **मोहनजोदड़ों** नामक **दोनों राजधानियाँ** उत्तम **नगरविन्यास** का **उदाहरण** हैं। वहाँ के **वास्तु विद्या** आचार्यों ने **दुर्ग** के रूप में उनका **विधान** किया।
- उनके **पुरविन्यास** में **परिखा**, **प्राकार**, **वप्र**, **द्वार**, **अट्टालक**, **महापथ**, **प्रसाद**, **कोष्ठागार**, **सभा**, , **वीथी**, **जलाशय** आदि वास्तु के अनेक स्थल प्राप्त हुए हैं।
- कोट के भीतर **नगर चौड़े महापथों से विभक्त** था जो चतुष्पथों के रूप में एक दूसरे से मिलते थे और फिर उनसे **कम चौड़ी रथ्याओं और वीथियों में बँट** जाते थे और समस्त पुर को कई **चौक** या **मुहल्लों** में **बाँटते** थे।
- पुरनिर्माण के आरम्भ में **वास्तु-विद्याचार्यों** ने उसका जैसा **विन्यास** किया था वह लगभग उसी रूप में एक **सहस्त्र वर्षों के अन्त तक** बना रहा।

रास्ते

- नगर का **मुख्य राजमार्ग 33 फीट चौड़ा** है।
- उस पर कई **गाड़ियाँ एक साथ** चल सकती हैं।
- **कम चौड़ी सड़के** 12 फीट से 9 फीट तक हैं। इसके बाद **4 फुट तक चौड़ी गलियाँ** भी हैं।
- **सड़कों** पर **ईट बिछाकर** उन्हें **पक्की** करने का **रिवाज** नहीं था।
- केवल **बीच** में बहने वाली **नालियों** को **ईंटों** से **पक्की बनाकर** ईटों से ही **ढंकते** थे।

घर

- घर प्रायः **एक सीध में** और **गलियों** की **ओर** बनाए जाते थे। उनकी **माप** प्राय: 27 फुट x 29 फुट या बड़ें घरों की इससे दुगुनी होती थी। उनमें कई **कमरे**, **रसोईघर**, **स्नानघर** और बीच में **आँगन** होता था और वे **दुखण्डे** बनाए जाते थे।

- कमरों में **फर्श पक्के** न थे, **केवल मिट्टी** कूटकर कच्चे रखे जाते थे।
- **स्नान** की **कोठरियों** में **पतली ईंटें** लगाकर फर्श में एकदम ऐसी जुड़ाई करते थे कि एक बूंद भी पानी न भरने पाये।
- मोटी दीवारों में **नल लगाकर नहाने धोने** का **पानी** नीचे उतार कर **सड़क की ओर** नालियों में बहा दिया जाता था। इससे होने वाली **स्वच्छता** जोकि **हड़प्पा संस्कृति** की **विशेषता** थी।
- प्रायः हर अच्छे घर में **मीठे पानी से भरा हुआ कुआँ** था।

कुएँ

- कुएँ के मुँह पर कुछ **ऊँची मुड़ेर** रहती थी जिसकी ऊपरी कोर पर रस्सी आने-जाने के निशान अभी तक बने हैं।
- वास्तुकाला की दृष्टि से **मोहनजोदड़ो** तथा **हड़प्पा** के **बड़े अन्नागार** भी **अद्भुद** है। पहले इसे **स्नानागार** का **ही एक भाग** माना जाता था।
- किन्तु **उत्खनन** के **पश्चात** यह ज्ञात हुआ है कि ये एक **विशाल अन्नागार** के **अवशेष** है।
- स्नानागार के निकट **पश्चिम** में **विद्यमान पक्की ईंटों** के विशाल चबूतरे पर **मोहनजोदड़ो** का **अन्नागार** निर्मित है, जिसकी पूर्व से पश्चिम की **लम्बाई 150 फी**ट तथा उत्तर से दक्षिण की **चौड़ाई 75 फीट** है।

गुफाएं

- मौर्योत्तर काल में **दो प्रकार की शैल गुफाओं का विकास** देखा गया - **चैत्य** और **विहार।**
  - **विहार** का विकास **मौर्य सामाज्य के दौरान** हुआ था जबकि **चैत्य** कक्षों का विकास **मौर्योत्तर काल** के दौरान हुआ।
  - **चैत्य प्रार्थना** के उद्देश्य से बनाया गया एक **आयताकार प्रार्थना कक्ष** होता था जिसके **केंद्र** में **स्तूप** को रखा जाता था तथा **विहारों** का उपयोग **भिक्षुओं के निवास स्थल** के रूप में किया जाता था।

- **उदाहरण**: कार्ले का चैत्य, अजंता की गुफाएं, उदयगिरी और खंडगिरी की गुफाओं (ओडिशा) को कलिंग राजा खारवेल के द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया था। ये हाथीगुंफा अभिलेख के लिए प्रसिद्ध हैं जिसे ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्णित किया गया था।

कार्ले का चैत्य, अजंता की गुफाएं अजंता की गुफा की चित्रकारी

- सतवाहन काल के दौरान, इन गुफाओं को **राजकीय संरक्षण** प्राप्त हुआ और ये **अधिक विस्तृत** और **अलंकृत** होते चले गए। द्वारों पर विभिन्न प्रकार के **मिथुन जोड़ों** को **उत्कीर्णित** किया गया। **बहुमंजिला गुफाएं तराशी** जानी शुरू की गई। कार्ले में **दो मंजिला विहार** और **अजंता** में **तीन मंजिला विहार** बनाए गए।

एलोरा गुफाएं, महाराष्ट्र

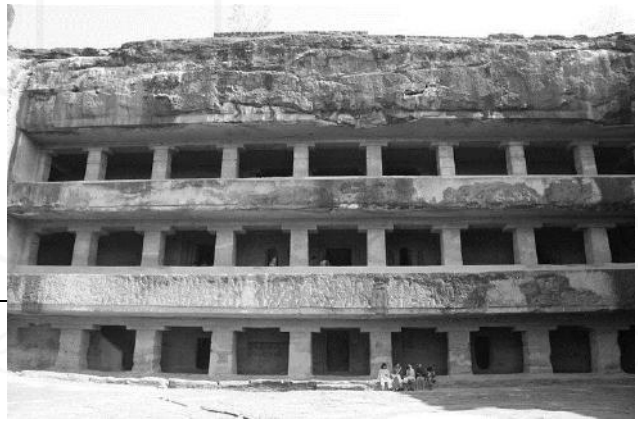

- यह महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में **अजंता** की गुफाओं से **लगभग 100 किलोमीटर दूर स्थित** है।
- **5वीं से 11वीं शताब्दी** के दौरान **निर्मित**
- **यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल।**
- **34 गुफाएं - 1**7 हिंदू धर्म, 12 बौद्ध और 5 जैन।

एलीफेंटा गुफाएं

- मुंबई हार्बर में **एलीफेंटा या श्रीपुरी द्वीप** पर।
- **हाथी** की **विशाल आकृति** को देखकर पुर्तगालियों ने एलीफेंटा नाम दिया। **गर्भगृह** के **प्रवेश द्वार** पर **द्वारपालों** की **विशाल आकृतियाँ** हैं।

बादामी गुफाएं(कर्नाटक)

- **लाल बलुआ पत्थर** से निर्मित। इन गुफाओं में **तीन ब्राह्मणवादी** और एक **जैन** (पार्श्वनाथ) और एक **प्राकृतिक बौद्ध** गुफा है।
- भित्ति चित्रों में **गुफा चित्रकला** एक महत्वपूर्ण **विशेषता** है। ये **सबसे पहले ज्ञात हिंदू गुफा चित्र** हैं
- जीवित **भित्ति चित्रों** में **शिव** और **पार्वती** शामिल हैं। **पुराणों**, **महाभारत** आदि की **कहानियां चित्रित** हैं
  - गुफा को ,**विष्णु गुफा** के रूप में जाना जाता है क्योंकि गुफाओं में चित्रण **वैष्णव संबद्धता** को **दर्शाता** है
  - **चालुक्य** राजा, **मंगलेश** द्वारा **संरक्षित**
  - **गुफा संख्या 4** में शिलालेख **578-579 सीई** की तारीख का उल्लेख करता है, गुफा की सुंदरता का वर्णन करता है और इसमें **विष्णु** की **छवि** का **समर्पण** शामिल है।

जैन गुफाएँ	बौद्ध गुफाएँ
जैना गुफाओं को बलुआ पत्थर से तराशा गया था (तराशने के लिए आश्न लकिन मूर्तिकला के लिए मुश्किल)।	बौद्ध गुफाओं को कठोर चट्टानों से तराशा गया था (मूर्तिकला के लिए उपयुक्त)।
जैना गुफाओं में कोई सभा कक्ष या पत्थर से तराशे गए धार्मिक स्थल नहीं होते थे।	बौद्ध गुफाओं में सभा कक्ष और धार्मिक क्षेत्र होते थे।
जहाँ भी चट्टानों को काटा जा सकता था, जैन गुफाओं को वहाँ काटकर बनाया गया था, गुफाओं को काटने में कोई योजना नहीं होती थी।	बौद्ध गुफाओं को अच्छी तरीके से योजना बनाकर तराशा गया था।
जैना गुफाओं सरल तरीके से बनी होती थी और उनमे जैन भिक्षुओं के सन्यास की झलक दिखाई देती थी।	बौद्ध गुफाएँ विस्तृत तथा विशाल होती थी।

मंदिर वास्तुकला

- भारत में मंदिर वास्तुकला का विकास **गुप्त युग के दौरान चौथी** से **पांचवीं शताब्दी ईस्वी** में हुआ।
- पहले **हिंदू मंदिर शैल्कर्तित गुफाओं** से बनाए गए थे, जो **बौद्ध संरचनाओं** जैसे स्तूपों से **प्रभावित** थे।
- इस अवधि के दौरान, बड़े पैमाने पर **मुक्त खड़े मंदिरों का निर्माण** किया गया।
- **दशावतार** मंदिर (देवगढ़, झांसी) और **ईंट मंदिर** (भितरगांव, कानपुर) इस अवधि के दौरान बनाए गए मंदिरों के कुछ उदाहरण हैं।
- भारत में हिंदू मंदिरों के **स्थापत्य सिद्धांतों** का **वर्णन शिल्प शास्त्र में** किया गया है जिसमें तीन मुख्य प्रकार के मंदिर वास्तुकला का उल्लेख है - **नागर** शैली, **द्रविड़** शैली और **वेसर** या मिश्रित **शैली।**

मंदिर वास्तुकला की शैलियाँ

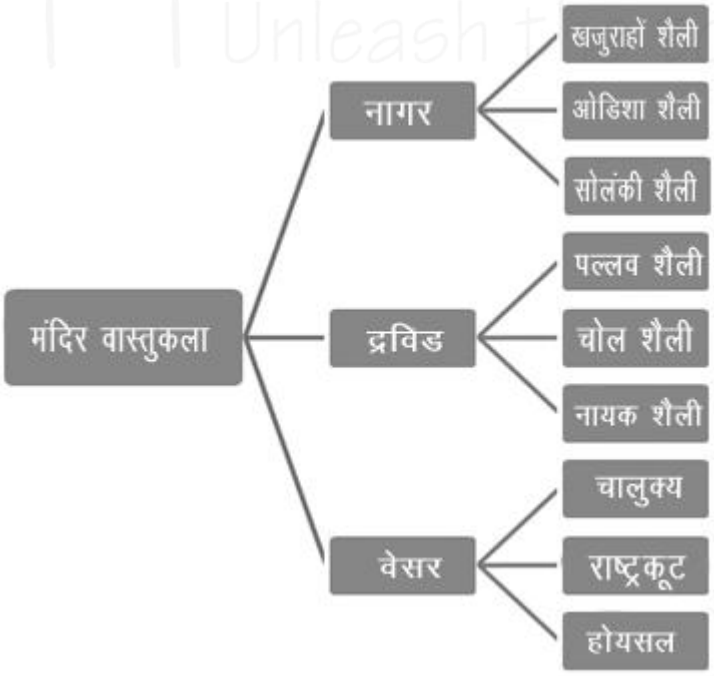

उदभव एवं विकास (100 BC - 1700 / 1800 AD)

नागर शैली	मोर्योत्तर काल → गुप्तकाल→ पूर्वमध्यकाल (100 ईसा पूर्व - 300 ईसवी) (319-550 ईसवी) (700-1200 ईसवी)
द्रविण शैली	पल्लव → चोल→ विजयनगर → नायक (7 -9वी सदी) (9-13वी सदी) (14-16वी सदी) (14-18वी सदी)
बेसर शैली	पशिमी चालुक्य → राष्ट्रकट → होयसल (7 -9 वी सदी) (10-12वी सदी) (13-14 सदी)

मंदिरो की नागर शैली

- उत्तर भारत में **हिमालय से विध्य के मध्य** नागर मंदिर मिलते है
- नागर मंदिरों का **निर्माण ऊचे चबूतरे** या **अधिष्ठान** या **जगती** पर किया जाता है।
- इन मंदिरो का **गर्भगृह वर्गाकार** होता है
- **गर्भगृह** के उपर बनी **आकृति शिखर रेखा** या **आर्य शिखर** कहलाती है।
- शिखर को गर्भगृह से उपर की तरफ **वक्राकार** ढंग से बनाया गया है। तथा इसकी **ऊचाई बढ़ती** जाती है।
- इसके लिए **गर्भगृह से चारो तरफ प्रक्षेपण आकृति** निकाले जाते है।
- शिखर के **सर्वोच्च भाग** पर **आमलक** (चक्राकार संस्चना या गतिका परिचायक) एव **कलश** बना होता है।
- गर्भगृह के **चारो तरफ अंतराल** होता है जिसका प्रयोग **प्रदक्षिणा पथ** के रूप में किया जाता है।
- बड़े नागर मंदिरों में गर्भगृह के सामने अन्य **सहायक संरचनाये** जैसे- महामण्डप, मण्डप, मधमप, नृत्यगंडप आदि वने होते है।
- कुछ स्थानों पर नागर मंदिर **पंचायतन शैली में बने** होते है जिसके तहत **केद्र** में एक **विशाल मंदिर** तथा **चारो कोनों** पर **सहायक देवी देवताओ के मंदिर** बनाए जाते हैं।

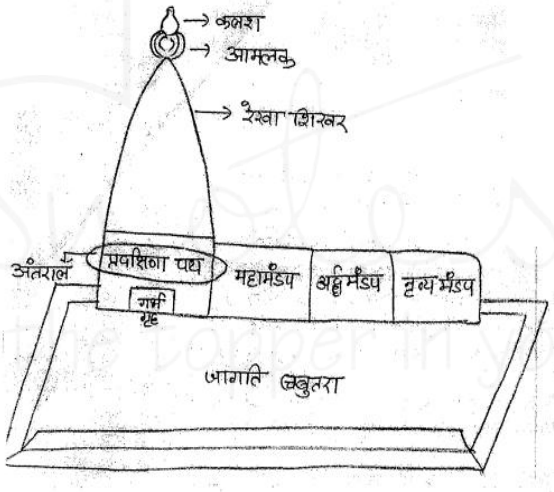

- नागर मंदिरों के **बाहरी भागों** में **आले** (ताखा) **काटकर** अनेक प्रकार की **मूर्तियों** से इन्हें **सजाया** जाता है। इन मूर्तियों में अनेक **देवी देवताओं**, लोकविषयों से संबंधित जैसे **नाग अप्सरा**, **मिथुन**, नृत्य संगीत आदि आम स्त्री पुरुष की **मूर्तिया** बनी होती है। जिन्हें **उत्तर प्रदेश** के देवगढ़ , **कंडरिया महादेव**, **खजुराहों** ,**भुवनेश्वर** आदि मंदिरों में देखा जा सकता है।
- **शिखरों की आकृति के आधार पर** नागर मंदिरों को वर्गीकृत किया जा सकता है-
  - **लैटिना/ रेखाप्रसाद**
    - इसका वर्गाकार आधार होता है।
    - यह **सबसे सरल और सबसे सामान्य प्रकार** है।
    - **ज्यादातर गर्भगृह के लिए इस्तेमाल** किया जाता है।
  - **फमसाना**
    - इसका एक **व्यापक आधार** होता है।
    - लैटिना की तुलना में **ऊंचाई में कम ।**
    - ज्यादातर **मंडप के लिए उपयोग** किया जाता है।

- **वल्लभी**
  - इसका एक **आयताकार आधार** है
  - छत जो एक **गुंबददार प्रकोष्ट** का निर्माण करती है।
  - **अर्धगोलाकार छतो** के रूप में जाना जाता है।

- **कुछ प्रमुख उदारण**
  - दशावतार मंदिर - देवगढ़ (UP)- विष्णु
  - कंदरिया महादेव - खजुराहो (MP)- शिव
  - लक्ष्मण मंदिर - खजुराहों 'विष्णु
  - लिंगराज मंदिर - भुवनेश्वर -शिव
  - अरसावली मंदिर – आंद्रप्रदेश - सूर्य
- **नागर शैली के अंतर्गत 3 उपशैलियाँ:**

1. ओडिशा शैली

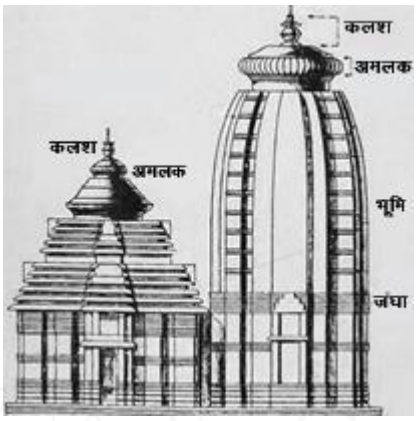

- मंदिर **शुद्ध नागर शैली का प्रतिनिधित्व** करते हैं।
- ओडिशा में **कलिंग साम्राज्य** के समय में नागर शैली के अन्तर्गत ही ओडिशा मंदिर स्थापत्य शैली का विकास हुआ, जिसमें अनेक **विशेषताएँ** देखने को मिलती हैं, जैसे-
  - मंदिर की **बाहरी दीवारों** पर **बारीक नक्काशी** की जाती थी जबकि **भीतरी दीवारें बिना** किसी **नक्काशी** के खाली छोड़ दी जाती थीं।
  - **मंदिर की छत को लोहे के गार्डरों से सहारा** दिया जाता था।
  - **शिखर** - **रेखा-देउल** जो क्षैतिज आकार में होने के बाद शीर्ष पर एकदम से अन्दर की तरफ मुड़े थे।
  - ये मंदिर द्रविड़ शैली के समान ही **परकोटे से घिरे** थे।
  - **मंदिर के मंडप** को **जगमोहन** कहा जाता था।

2. खजुराहो शैली

- **मंदिरों** में एक **गर्भगृह**
- एक **छोटा आंतरिक-कक्ष** (अंतराल), एक **अनुप्रस्थ** भाग (**महामण्डप**)
- अतिरिक्त **सभागृह** (अर्ध मंडप)
- एक **मंडप** या बीच का भाग
- एक **बड़ी खिड़कियों** वाला चल मार्ग (**प्रदक्षिणा-पथ**)।
- मंदिरों की **नक्काशी** मुख्य रूप से **हिंदू देवताओं** और **पौराणिक कथाओं** के **संबंध** में है।
- स्थापत्य शैली भी **हिंदू परंपराओं** के **अनुसार** है। इनकी **विभिन्न कारकों** द्वारा **पुष्टि** कि जा सकती है।
- हिंदू मंदिर के निर्माण की एक **प्रमुख विशेषता** यह है कि **मंदिर** का **मुख सूर्योदय** की दिशा की ओर होना चाहिए।
- इसके अलावा, इनकी **नक्काशी** हिंदू धर्म में जीवन के **चार लक्ष्यों** अर्थात, धर्म, काम, अर्थ, मोक्ष को दर्शाती है।
- **मूर्तियों** और **कामुक चित्रों** का समूह **दैनिक जीवन** के **दृश्यों** को **प्रतिनिधित्व** करता है।

3. **सोलंकी शैली**

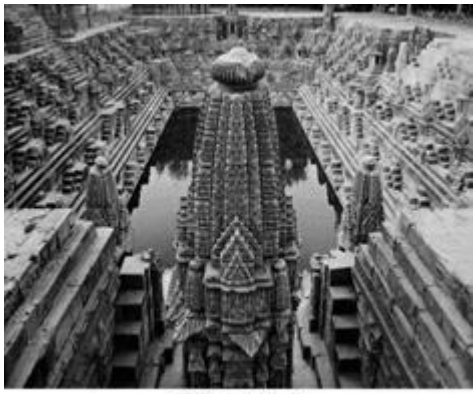
मोढेरा सन टेम्पल

- **गुजरात** और **राजस्थान** में निर्मित
- इसके तहत **हिन्दू मंदिरों** के साथ-साथ **जैन मंदिरों** का भी **निर्माण** हुआ।
- **अर्द्ध-गोलाकार पीठ** और **'मंडोवार' गुजरात उपशैली** की पहचान विशेषता हैं।
- वह **अर्द्ध-गोलाकार संरचना** जिसकी वजह से छत-शिखर अलग-अलग दिखता है, उसे **मंडोवार** कहते हैं।
- **उदाहरण:** माउंट आबू का आदिनाथ मंदिर, तेजपाल मंदिर, पालिताना के सैकड़ों मंदिर, सोमनाथ मंदिर, मोढ़ेरा का सूर्य मंदिर आदि इस शैली के प्रमुख उदाहरण हैं।
- माउंट आबू पर बने कई मंदिरों में **संगमरमर** के **दो मंदिर** हैं- **दिलवाड़ा** का **जैन** मंदिर तथा **तेजपाल मंदिर** (अर्बुदगिरी के बगल में)।
- कुंभरिया के **पार्श्वनाथ मंदिर** में भी राजस्थान के **मकरान** से **उपलब्ध** काले और सपेद **संगमरमर** का इस्तेमाल किया गया है।
- माउंट आबू के **मंदिरों** का **निर्माण** सोलंकी शासक **भीम सिंह प्रथम** के मंत्री **दंडनायक विमल** ने करवाया था, इसी कारण इसे विमलबसाही मंदिर भी कहते हैं।
- सोमनाथ मंदिर को सोलंकी शासकों की देन न मानकर **गुर्जर-प्रतिहारों** की **देन** माना जाता है।

मंदिरों की द्रविड शैली

- विकास - **कृष्णा नदी से कन्याकुमारी** के बीच वर्तमान तमिलनाडु, केरल, निचला आंध्र प्रदेश आदि के मध्य हुआ है।
- द्रविड़ मंदिरों मे **ऊचा चबूतरा नहीं** होता है। यह **मंदिर धरातल** के **निचले हिस्से** से बनना **प्रारंभ** होता है।
- द्रविड़ मंदिरों का **गर्भगृह वर्गाकार** एवं इसके उपर का **शिखर पिरामिडाकार** होता है जो तल्ले के ऊपर तल्ला घटते क्रम में मे बना होता है।
- इसके **ऊचे उठते भाग** को **विमान** कहा जाता है, **शिखर** के **सर्वोच्च भाग** पर **स्तूपिका** नामक **संरचना** बनी होती है।
- गर्भगृह के **चारो ओर अन्तराल** बना होता है जितका **प्रयोग दक्षिणा पथ** के लिए किया जाता है।
- **गर्भगृह** के सामने **बहुसंख्यक स्तंभों** पर टिका **महामण्डप** बना होता है। साथ ही **अन्य सहायक रचनाए** जैसे- अधिमंड़प एवं नदीमण्डप आदि बने होते है।
- **द्रविण मंदिर चारदीवारी** के **भीतर** बने होते है**। मंदिर प्रांगण** में **तालाब** बना होता है। प्रांगण के **भीतर सहायक मंदिर** (देवी-देवता एवं राजा रानियों) के भी बने होते है।
- द्रविण मंदिरों का **प्रवेश द्वार** काफी **भव्य** एवं **विशाल** होता है। जिसे **गोपुरम** कहा जाता है।
- मंदिरों के बाहरी भागो पर **मण्डपो** से लेकर **शिखर** तक **देवी-देवताओं की मूर्तियों** एवं **लोक विषयों** से सम्बंधित **मूर्तियों** का **अरभूत शिल्पांकन** किया जाता है।
- **मंदिर-** वृहदेश्वर एवं मिनाक्षी मंदिर ।

नागर एवं द्रविण शैली के मंदिरों में अन्तर

नागर शैली	**द्रविड़ शैली**
• **रेखीय शिखर** होता है	• **पिरामिडाकार शिखर** होता है

• शिखर के **सर्वोच्च भाग पर आमलक** तथा **कलश** जैसी संरचना होती है
• सामान्यतः **ऊचा चबूतरा** बना होता है।
• चारदिवारी तथा प्रांगण के भीतर **तालाब निर्माण आवश्यक नहीं** है।
• **भव्य प्रवेश द्वार** सामान्यतः **नही** बने होते है।
  ○ वास्तुशास्त्र की भाषा में इन्हें **प्रसाद** कहा जाता है।
	• सर्वोच्च भाग पर **स्तूपिका** वनी होती है
	• **ऊचा चबूतरा आवश्यक नहीं** होता है ,मंदिर सामान्यतः धरातल से ही बनने प्रारम्भ हो जाते है।
	• **चारदिवारी का निर्माण** तथा **प्रांगन में तलाब** यहां की मुख्य विशेषता है
	• **भव्य प्रवेशद्वार** होते है जिसमे **गोपुरम** यहाँ की विशेष परम्परा है।
	  ○ इन्हें **वास्तुशास्त्र में विमान** कहा जाता है।

पल्लवों की मंदिर वास्तुकला

- **मंदिरों के प्रत्यक्ष संरक्षण** की परंपरा पल्लवों के साथ शुरू हुई।
- पल्लव राजा **महेंद्रवर्मन प्रथम** के शासनकाल से, तमिलनाडु में पल्लव कला के **बेहतरीन उदाहरण** जैसे शोर मंदिर और महाबलीपुरम के 7 पैगोडा बनाए गए थे।
- महिषासुरमर्दिनी, गिरि गोवर्धन पैनल, गजलक्ष्मी और अनातसायनम कुछ **शानदार मूर्तियां** हैं जिनका संरक्षण किया गया है।
- पल्लव वास्तुकला **शैलकृत मंदिरों से लेकर शैल निर्मित मंदिरों** तक के संक्रमण को दर्शाती है।

महेंद्र समूह या महेंद्रवर्मन शैली (600-630 ईसवी)

- यह **सबसे प्रारंभिक** शैली थी जिसे मंडप कहा जाता है
- इसके तहत **पहाडी को सामने की तरफ से काटकर** पिछले भाग में **साधारण कक्ष** (गर्भगृह) एवं **बरामदा** का **निर्माण** किया गया
- **गर्भगृह** के **प्रवेश द्वार** पर **द्वारपालों** की **मूर्तिया** तया अनेक **स्तम्भ** बनाए गए।
- उसके तहत **कई मंडपों का निर्माण** किया गया जिसमें **त्रिमूर्ति मंडप**, **पंच पांडव मंडप** (पल्लवरम) तथा **महेन्द्र विष्णु मंडप** आदि मुख्य है।

नरसिंहवर्मन 1 /मामल्ल शैली (मण्डप +रथ)/ नरसिंह समूह

- यह भी **शैलकृत मंदिरों की शैली** है।
- इसके तहत **मन्डपो के साथ रथों का निर्माण** किया गया।
- **मण्डप**
  - कनेरी मंडप
  - आदिवराह मंडप
  - पंचपांडव मण्डप
- **प्रमुख विशेषताए**
  - उस काल में **रथो का निर्माण पहाड़ी को ऊपर से नीचे की तरफ काटकर** किया गया है।
  - ये **रथों के अनुकरण मे** बने है।
  - इन पर **बोद्ध चैत्यो एवं विहारों का भी प्रभाव** है।
  - सभी रथ **एक समान नहीं** है बल्कि ये कई मंजिलों में बने हुए है
  - रथों के **सर्वोच्च भाग पर स्तूपिका** बनी होती है।
  - **सभी रथ मंदिर महाबलीपुरम** में बने हैं।
  - इनकी संख्या सात है इन्हें **सप्त पैगोडा** भी कहते है।
    1. युधिष्ठीर रथ (सबसे बड़ा)
    2. भीमरथ

रथ मंदिर महाबलीपुरम

3. अर्जुन रख
4. नकुल/ सहदेव रथ
5. द्रोपती रथ ..
6. गणेश रथ
7. पिंडारी या वलयकुडी रथ

- रथ केवल स्थापत्य के ही उदारण नहीं है बल्कि ये **शिल्प कला के भी उत्तम प्रदर्शन** है।
- इनके बाहरी भागों पर **रामायण, महाभारत** तथा **पौराणिक कथाओं** जैसे अर्जुन की तपस्या ,शिव की किरात ,राम का वनवास आदि का उल्लेख है

नरसिंह वर्मन द्वितीय / राजसिंह शैली

- इस काल में पल्लवों ने **शैलकृत तकनीकी का परित्याग** कर दिया ।
- यहाँ से **संरचनात्मक मंदिर** बनाये जाने लगे।
- जिनका **निर्माण खुले धरातल पर** ईटों एवं पत्थरो पर किया गया।
- राजसिंह शैली की संरचनात्मक मंदिरों की **विशेषताएं** निम्न है
  - वर्गाकार गर्भगृह
  - गर्भगृह के उपर पिरामिडाकार शिखर
  - सर्वोच्च भाग पर स्तूपिका
  - गर्भ गृह के चारो तरफ अन्तराल
  - सामने की तरफ मंडपों का निर्माण
  - मंदिरो के चारो तरफ चहारदिवारी एवं प्रवेश द्वार पर गोपुरम का निर्माण
  - इसके तहत महाबलिपुरम काशोर मंदिर (शिव),कांची का कैलाशनाथ मंदिर एवं बैकुण्ठपेरुमाल मंदिर

नंदीवर्मन शैली

- राजसिंह शैली की भाँति यह भी **मंदिरों की संरचनात्मक शैली** है।
- जिसकी **विशेषताएं राजसिंह शैली की भांति** है।
- इसके तहत **कांची का मुक्तेश्वर मंदिर** तथा **गुडीमंगलम का परशुरामेश्वर मंदिर** आदि आते है।

चोल मंदिर (9-13 वी सदी)

- **पल्लवो को पराजित कर** सत्ता में आए।
- चोलो ने पल्लवों द्वारा प्रारम्भ **द्रविण शैली** को **जारी** रखा और उसे **उचाइयो पर पहुचाया** –
- चोलो के काल में **अत्यंत भव्य** एवं **विशाल मंदिर** बने ।
- मंदिरों के साथ **अत्यंत कलात्मक** एवं **खूबसूरत मूर्तियों** का **निर्माण** हुआ तथा कुछ की **दिवारों पर चित्रण** भी किया गया।
- **चोल मंदिरों की विशेषताएं**
  - **वर्गाकार गर्भ गृह** , घटते क्रम में **पिरामिडाकार शिखर।**
  - सर्वोच्च भाग पर **स्तूपिका** , गर्भ गृह के चारो ओर **अन्तराल**, गर्भगृह के सामने **महामंडप**, **अर्धमंडप**
  - तथा **नदी मंडप** जैसी संस्चनाओं का **निर्माण** हुआ है
  - **चारदीवारी प्रांगण** में तालाब एवं सहायक मंदिर ,देवी-देवता एवं राजारानी के मंदिर।
  - दो **दो भव्य गोपुरम** का निर्माण हुआ है
  - **प्रमुख मंदिर** में नतमलई मंदिर, तंजौर का वृहदेश्वर , गगईकोडचोलपुरम का मंदिर , एरावतेश्वर एवं कपहरेश्वर मंदिर आदि मुख्य मंदिर है

- **चोल मंदिरों के विशेष लक्षण**
  - चोल मंदिरों का **निर्माण ग्रेनाईट के बड़े-बड़े पत्थरों से** किया गया है , ये अपनी **भव्यता** एवं **विशालता** के लिए जाने जाते है।
  - जैसे **तंजोर के वृहदेश्वर मंदिर** की ऊचाई 190 फिट है, इसमे कुल 13 तल्ले बने है।
  - **शिखर के सर्वोच्च भाग** पर **34 टन वजन** का एक **विशालकाय स्तूपिका** बनी है।
  - चोल मंदिर **वास्तु** के साथ-साथ **मूर्तिकला एवं चित्रकला के उत्तम उदाहरण** है।
  - मंदिरो के बाहरी भागों पर **दीवारों**, **स्तंभों** आदि पर रामायण ,महाभारत तथा पौराणिक कथाओं के अनेक देवी देवताओं की खूबसूरत एवं कलात्मक **प्रतिमाए** बनायीं गयी।
  - **ब्रिहदेश्वर** जैसे मंदिर में देवी-देवताओं के **पौराणिक कथा** के **चित्र** दीवारों पर बने है।
  - चोल मंदिरों की **विशालता**, **भव्यता** एवं **साज सज्जा** इतनी आकर्षित करती है कि फर्ग्युसन ने कहा है कि "चोलों ने दैत्यों की तरह सोचा तथा जोंहरीयों की तरह पूरा किया।"

बृहदीश्वरार मंदिर

मीनाक्षी सुंदरेश्वर मंदिर

नायक शैली के मंदिर

- **1565** में **विजयनगर साम्राज्य** का **पतन** हुआ
- **स्थानीय सामन्तों** का **उदय** हुआ जिन्हें **नायक** कहा गया
- मंदिरों की **द्रविड शैली** को **सर्वोच्च स्तर** प्रदान किया।
- **बहुसंख्यक मंदिरों** का **निर्माण** कराया गया
- **विशेषताएं**
  - सभी **द्रविड विशेषताएँ** जैसे , वर्गाकार गर्भगृह, पिरामिडाकार शिखर, स्तूपिका अन्तराल, बहुसंख्यक कक्ष/मंडप
  - नायकों के तहत **भारी संख्या में गोपुरम्** का **निर्माण** कराया गया
  - मंदिरों की **साज सज्जा** एवं **अलंकरण** काफी खूबसूरत है। जिसका प्रमुख **उदारण** रामेश्वरम् का गलियारा है।
  - ऐसा लगता है कि यहाँ आते आते **द्रविड़ वास्तुकला** ने अपना **सर्वोच्च स्तर** पाप्त कर लिया हो।
  - नायक मंदिर **स्थापत्य मूर्ति** एवं **चित्रकला** के **अद्भुद संगम** है **।**
  - बाहरी दिवारो पर **गोपुरम** के बाहरी **भागो स्तंभों** आदि पर **अत्यन्त कलात्मक ढंग** से अनेक **देवी-देवताओं की मूर्तिया** बनायी गयी है,
  - **मदुरै के मीनाक्षी मंदिर** में अत्यंत **खूबसूरत चित्रण** भी किया गया है।

बेसर शैली के मंदिर एवं उनकी विशेषताएं

- **बेसर मंदिरों का निर्माण** मुख्यतः **विंध्य पर्वतमाला** से **कृष्णा घाटी** के बीच (वर्तमान महाराष्ट्र एवं कर्नाटक) हुआ।
- वेसर मंदिरों का **विकास मुख्यतः 7 वी से 13वीं सदी के बीच**

पश्चिमी **चालुक्यों** ,**राष्ट्रकूटो** तथा **होयसल** शासकों के द्वारा कराया गया।

वास्तुकला व मूर्तिकला (नटराज की मूर्ति)

- वेसर शैली **मौलिक शैली नहीं** है बल्कि यह **नागर एवं द्रविण शैली का मिश्रण** है।
- बेसर **मंदिरों** की **धरातल** योजना एवं **आकार द्रविण मंदिरो जैसे** होते है। इसका **शिखर ढोलाकार** या पीपानुमा होता है। **गर्भगृह**, **मण्डप** एवं **सर्वोच्च भाग** पर **स्तूपिका** आदि द्रविण मंदिरों जैसे बने होते है।
- लेकिन **अलंकरण** एवं **सजावट** नागर **मंदिरों जैसा** होता है ।
- आधिकांश **वेसर मदिरों** का **गर्भगृह वर्गाकार** होता है। लेकिन उसके **अपवाद** भी मिलते है जैसे होयसल शासकों के तहत बने **मंदिर का गर्भगृह बहुकोणीय** या **तारा आकृति** में बना होता है
- **बेसर शैली के मंदिर**
  - चालुक्यों द्वारा **मुख्यतः तीन केंद्र** पर **बहुसंख्यक मदिरों** का निर्माण किया गया
    - एहोल
    - बादामी
    - पदाक्कल

चालुक्यों की मंदिर वास्तुकला

- बादामी चालुक्य काल के दौरान **6वीं और 8वीं शताब्दी** के **बीच** की अवधि में विकसित
- इसे "**चालुक्य वास्तुकला**" या "**कर्नाटक द्रविड़ वास्तुकला**" कहा जाता था।
- **लाल-सुनहरा बलुआ पत्थर** इन मंदिरों की **प्रमुख निर्माण सामग्री** थी।
- उनके द्वारा निर्मित गुफा मंदिरों में **धार्मिक** और **धर्मनिरपेक्ष** दोनों **विषयों** को **दर्शाया** गया है।
- मंदिरों में **खूबसूरत भित्ति चित्र** भी थे।
- **मंजिलों** की **ऊंचाई कम** थी और **मंजिलों को** आधार से ऊपर की ऊंचाई के **अवरोही क्रम** में व्यवस्थित किया गया था और प्रत्येक मंजिल में **अत्यधिक अलंकरण** था।
- **प्रारंभिक चालुक्य** मंदिरों में शैलकृत गुफाएं बनाई गयी है जबकि बाद में संरचनात्मक मंदिरों का निर्माण हुआ है।
- चालुक्य आकृतियाँ उनके **पतले शरीर, सुंदर लंबे, अंडाकार चेहरों** की वजह से विशिष्ट हैं; वे **समकालीन पश्चिमी दक्कन** या **वकटक शैलियों** से **भिन्न** हैं।
- **उदाहरण**- बादामी के चालुक्यों का **सबसे प्राचीन स्मारक** एहोल में **रावण फाड़ी गुफा** है, जो बादामी से ज्यादा दूर नहीं है।
  - यह संभवत: **550 ईस्वी के आसपास बनाया** गया था और यह **शिव** को **समर्पित** है।
  - सबसे उल्लेखनीय मूर्तियों में से एक **नटराज** की है, जो सप्तमातृकाओं के बड़े-से-बड़े आकार के चित्रणों से घिरी हुई है: तीन शिव के बाईं ओर और चार उनके दाईं ओर।
- **बादामी गुफा मंदिर** बादामी में स्थित हैं।
  - **लाल बलुआ पत्थर** से बनी इन गुफाओं में **तीन ब्राह्मणवादी** और **एक जैन** (पार्श्वनाथ) और **एक** प्राकृतिक **बौद्ध** गुफा है।
  - मुख्य रूप से बादामी के गुफा मंदिरों में **विष्णु की उत्कृष्ट मूर्तियां** हैं।
- बादामी के चालुक्यों का **सबसे बड़ा मंदिर पत्तदकल** में **विरुपाक्ष मंदिर** है, जिसके परिसर में **30 उप मंदिर** और एक **बड़ा नाडी मंडपम** है।

- यह मंदिर **यूनेस्को का विश्व धरोहर स्थल** है।

पत्तदकल मंदिर परिसर - यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल

- मंदिर परिसर में **10 मंदिर** हैं- उनमें से **चार नागर शैली** के हैं और बाकी **छह द्रविड़ शैली** की विशेषताएं दिखाते हैं।
- पट्टाडकल में **विरुपाक्ष मंदिर**, यहां का **सबसे बड़ा** मंदिर है। इसके परिसर में 3**0 उप मंदिर और एक बड़ा नाडी मंडपम** है।
  - यह **शिव मंदिरों का सबसे पहला उदाहरण** था, जिसमें मंदिर के सामने एक **नंदी मंडप** है।

राष्ट्रकूट शैली के मंदिर

- **चालुक्यों को पराजित कर सत्ता में** आये
- इन्होने **वेसर शैली मे अनेक मंदिरो का निर्माण** करवाया।
- **प्रमुख मंदिर**
  - एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर
  - एलोरा स्थित एकाश्म जैन मंदिर
  - विश्वनाथ मंदिर (पदाक्कल)
  - नरायण मदिर (पदाक्कल)
- एलोरा की गुफाये **महाराष्ट्र के औरंगाबाद में स्थित** है। एलोरा कलाओं का संगम है जहां **वास्तुकला**, **मूर्तिकला** एवं **चित्रकला** तीनो का **अद्भुद समागम** दिखाई देता है
- यहाँ **ब्राह्मण**, **जैन**, **बोद्ध** धर्मो से सम्बंधित अनेक **कलाकृतियाँ** पाई जाती है।

कैलाशनाथ मंदिर

- **विशेषताएं**
  - एलोरा का **कैलाशनाथ मंदिर** राष्ट्रकूट शासक **कृष्ण-1 द्वारा निर्मित** कराया गया।
  - कैलाशनाथ मंदिर **शैलकृत वास्तु का अद्भुद उदाहरण** है
  - इसे एक **पहाडी** को ऊपर से **काटकर** इसका **निर्माण** किया गया है।
  - इसका **क्षेत्रफल 276*154 फुट** है।
  - मंदिर के तहत एक **गर्भगृह** (भगवान शिव को समर्पित)तथा कई **मंडपो** (कक्ष) का **निर्माण** किया गया है। इसका **प्रवेशद्वार पश्चिम दिशा** की **ओर** है **।**
  - एलोरा **कैलाशनाथ मंदिर** स्थापत्य कला एवं अभियांत्रकी का **श्रेष्ठ उदारण** है
  - कैलाशनाथ मंदिर की वास्तु संरचना के साथ इसका **शिल्पांकन** भी **काफी अद्भुद** है।
  - मंदिर में **पौराणिक कथाओं** के विषयों के अनेक **खूबसूरत प्रतिमामों** का **निर्माण** किया गया है**।**
  - रावण द्वारा **कैलाश पर्वत** उठाने, विष्णु के **नरसिंह अवतार**, **शिव-पार्वती विवाह**, शिव का **वैभव रूप**, शिव का **तांडव नृत्य**, आदि **अद्भूत** है।
  - यहा **अनेक धर्म निरपेक्ष मूर्तियाँ** भी बनी है। पहाड़ी को काटकर **हाथियों के झुण्ड की मूर्तियां** बनी है जो काफी **कलात्मक** है।
  - एलोरा की **वास्तुगत** एवं **शिल्पगत विशेषताओं** को देखकर कहा जा सकता है कि यह भारत मे विकसीत **शैलकृत वास्तुकला** का **सर्वोत्कृष्ट उदाहरण** है इसके पूर्व **चैत्य** ,**विहार** एवं **मंदिर** भी पहाड़ी को **काटकर** बनाये गए थे |

होयसल मंदिर

- राष्ट्रकूटों के बाद दक्कन मे **होयसल शासकों का आगमन** हुआ। इसके द्वारा भी अनेक **मंदिरों** का **निर्माण** कराया गया।
- होयसल मंदिर भी **बेसर शैली** के **मंदिर** है। इनकी कुछ **विशेषताएं** भी है।जैसे
  - यहां के मंदिरों का **गर्भगृह ताराकृतिक/ बहुकोणीय** रूप में बना है।
  - **दो-दो गर्भगृह** भी बने है।
- होयसलेश्वर मंदिर (हेलविड कर्नाटक)।
- चेन्नाकेश्वर मंदिर (वेल्लूर कर्नाटक)
- पदाक्कल एवं मैसूर के मंदिर

होय्सलेश्वारा मंदिर

विजयनगर मंदिर (14 -16 वी शताब्दी)

- विजयनगर साम्राज्य की **स्थापना** ,**हरिहर और बुक्का** द्वारा 1336 में की
- **विशेषताएं**
  - **वर्गाकार गर्भगृह** , **पिरामिडाकार शिखर** एवं सर्वोच्च भाग पर **स्तूपिका**
  - गर्भगृह के चारो तरफ **अन्तराल**
  - विजयनगर के मंदिरो में **गर्भगृह के सामने अनेक मंडपों का निर्माण** किया गया। जैसे **महामंडप,कल्याणमंडप, यज्ञमंडप** (यहा बलि दी जाती थी) **अमन मंदिर** (सहायक मंदिर) आदि।
  - विजयनगर के **मंदिर अत्यन्त खूबसुरत एवं साज सज्जा युक्त** है।
  - मंदिरों के बाहरी भागों में स्तभों आदि पर **अत्यंत बारीक एवं खूबसूरत शिल्प** बनाए गए हैं। जिसमे उडते हुए **अश्व, कमलपुष्प** आदि के शिल्प काफी अनोखे है
  - विजयनगर के मंदिरो का **गोपुरम् पल्लवों एव चोलों से भी भव्य** है ।
  - **प्रमुख मंदिरो** में नल्लौर का विष्णु मंदिर ,हम्पी के मंदिर ,विट्ठल स्वामी मंदिर ,हजारा ,विरूपाक्ष आदि

मंदिर वास्तुकला के पाल और सेन स्कूल

- बंगाल क्षेत्र में वास्तुकला की शैली ।
- यह पाल वंश और सेन वंश के संरक्षण में **8 वीं और 12 वीं शताब्दी** मध्य की अवधि में विकसित हुआ।
- पाल वंश लोग मुख्य रूप से **महायान परंपरा के बौद्ध शासक** थे, लेकिन बहुत **सहिष्णु** थे और **दोनों धर्मों का संरक्षण** करते थे।
- पाल राजाओं ने बहुत से **विहार, चैत्य और स्तूप** बनवाए।
- सेन वंश के लोग **हिंदू** थे और उन्होंने **हिंदू देवताओं के मंदिरों का निर्माण** किया और **बौद्ध स्थापत्य** भी बनाए रखा।
- इस प्रकार वास्तुकला ने **दोनों धर्मों का प्रभाव** दर्शाया है।

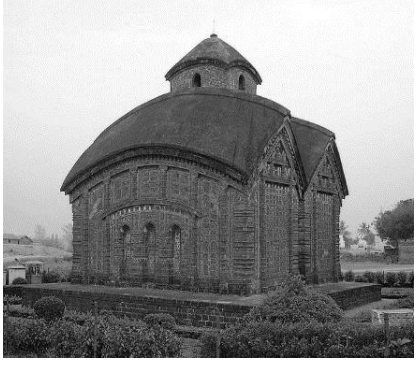

- **विशेषताएं**:
  - इमारतों में एक **घुमावदार या ढलान वाली छत** थी, जैसे बांस की झोपड़ियों में होती है।
  - यह लोकप्रिय रूप से **बंगला छत के** रूप में जाना जाता है और बाद में मु**गल वास्तुकारों द्वारा अपनाया गया** था।
  - **जलीं हुई ईंट** और **मिट्टी** जिसे **टेराकोटा ईंटों** के रूप में जाना जाता है **प्रमुख निर्माण सामग्री** थी।
  - इस क्षेत्र के मंदिरों का **शिखर लंबा गोलाकार** था, जिस पर **ओडिशा के स्कूल के समान एक बड़ा अमालक** रखा गया था।
  - इस क्षेत्र की मूर्तियों में **पत्थर के साथ-साथ धातु का उपयोग** किया गया था।
  - **पत्थर** इनका **प्रमुख घटक** था। यहाँ की मूर्तियाँ **अत्यधिक चमकदार** थी, जो कि इसे अद्वितीय बनाता है।
  - **उदाहरण**: बराकर में सिद्धेश्वर महादेव मंदिर, विष्णुपुर के आसपास के मंदिर आदि।

भारत में सूर्य मंदिर

सूर्य मंदिर सूर्य देव सूर्य को समर्पित हैं। देश में कई सूर्य मंदिर हैं।

कोणार्क सूर्य मंदिर

- कोणार्क सूर्य मंदिर **पूर्वी ओडिशा के पवित्र शहर पुरी** के **पास** स्थित है।
- इसका **निर्माण राजा नरसिंहदेव प्रथम** द्वारा 13वीं शताब्दी (1238-1264 ई.) में किया गया था। यह गंग वंश के वैभव, स्थापत्य, मज़बूती और स्थिरता के साथ-साथ **ऐतिहासिक परिवेश का प्रतिनिधित्व** करता है।
- पूर्वी गंग राजवंश को **रूधि गंग** या **प्राच्य गंग** के नाम से भी जाना जाता है।
- मध्यकालीन युग में यह **विशाल भारतीय शाही राजवंश** था जिसने कलिंग से **5वीं शताब्दी की शुरुआत से 15वीं शताब्दी की शुरुआत तक शासन** किया था।
- पूर्वी गंग राजवंश बनने की शुरुआत तब हुई जब **इंद्रवर्मा प्रथम ने विष्णुकुंडिन राजा को हराया।**
- मंदिर को एक **विशाल रथ के आकार में बनाया गया** है।
- यह **सूर्य भगवान को समर्पित** है।
- कोणार्क मंदिर न केवल अपनी स्थापत्य की भव्यता के लिये बल्कि **मूर्तिकला कार्य की गहनता** और **प्रवीणता** के लिये भी जाना जाता है।
- यह **कलिंग वास्तुकला** की उपलब्धि का **सर्वोच्च बिंदु** है जो अनुग्रह, खुशी और जीवन की लय को दर्शाता है।
- 1984 में **यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल** ।
- कोणार्क सूर्य मंदिर के दोनों ओर **12 पहियों की दो पंक्तियाँ** हैं।
- **सात घोड़ों** को सप्ताह के **सातों दिनों का प्रतीक** माना जाता है।
- समुद्री यात्रा करने वाले लोग एक समय में इसे **'ब्लैक पगोडा'** कहते थे, क्योंकि ऐसा माना जाता था कि यह **जहाज़ों** को **किनारे** की ओर **आकर्षित** करता है और उनको **नष्ट** कर देता है।
- **कोणार्क 'सूर्य पंथ'** के प्रसार के इतिहास की **अमूल्य कड़ी** है, जिसका **उदय** 8वीं शताब्दी के दौरान **कश्मीर** में हुआ, अंततः **पूर्वी भारत के तटों पर** पहुँच गया।

मोढेरा सूर्य मंदिर, गुजरात

- सोलंकी राजवंश के **भीम प्रथम के शासनकाल के दौरान** 1026-27 ईसवी के बीच निर्मित।
- यह मंदिर **पुष्पावती नदी के तट पर** स्थित है।
- सौ वर्ग मीटर का **आयताकार कुंड** (टैंक) शायद **भारत का सबसे भव्य मंदिर तालाब** है।
- तालाब के अंदर की सीढ़ियों के बीच **108 लघु मंदिर** बनाए गए हैं।

मोढेरा सन टेम्पल

- मंदिरों के **हॉल और स्तंभों को बड़े पैमाने पर उकेरा** गया है।
- एक विशाल सजावटी **मेहराबदार सभा मंडप** (विधानसभा हॉल) में **आगंतुकों का स्वागत** करता है, जो सभी तरफ से सुलभ है, जैसा कि उस समय पश्चिमी और मध्य भारतीय मंदिरों में प्रथा थी।

मार्तंड सूर्य मंदिर, कश्मीर

- **कर्कोट राजवंश** द्वारा निर्मित,
- सूर्य मंदिर का निर्माण **8 वीं शताब्दी ईस्वी** में कर्कोट राजवंश के तीसरे शासक **ललितादित्य मुक्तापीड** द्वारा किया गया था।
- मार्तंड का **संस्कृत** में **अर्थ** होता है सूर्य।
- संरचना का निर्माण **चूना पत्थर** से किया गया है, और पूरे परिसर को **अनंतनाग के पास एक पठार के ऊपर** बनाया गया है।
- भारत सरकार ने खंडहर हो चुके **मंदिर परिसर को पर्यटकों के लिए** खोल दिया है
- इस स्थल को **राष्ट्रीय, ऐतिहासिक और स्थापत्य महत्व का** माना जाता है और इसलिए यह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अंतर्गत आता है।

दक्षिणार्क मंदिर, गया (बिहार)

- वारंगल के **राजा प्रतापरुद** ने **13वीं शताब्दी** में बनवाया था।
- **सूर्य भगवान की मूर्ती** के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला पत्थर **ग्रेनाइट** से बना है
- देवता **फारसी पोशाक** जैसे जूते और एक जैकेट पहने हुए हैं।

सूर्यनारायण स्वामी मंदिर, अरासवल्ली (आंध्र प्रदेश) -

- यह कलिंग राजवंश के शासक **राजा देवेंद्र वर्मा द्वारा निर्मित** 7वीं शताब्दी ईस्वी का सूर्य मंदिर है।
- **निर्माण** इस तरह से किया जाता है कि सूर्य की किरणें **मार्च और सितंबर के दौरान शुरुआती घंटों** (सूर्योदय के समय) में (गर्भ गुड़ी में) **मूर्ति के पैरों पर** पड़ती हैं।
- विमान गोपुरम के अंदर की मूर्तियों को एक ही **काले पत्थर से उकेरा** गया है।

सूर्यनार कोविल, कुम्बकोणम (तमिलनाडु)-

- यह मंदिर तमिलनाडु के **नवग्रह मंदिरों में से एक** माना जाता है।
- 11वीं शताब्दी में **कुलोत्तुंग चोलदेव** (एडी 1060-1118) के शासनकाल के दौरान निर्मित; विजयनगर काल में और **दुसरे परिवर्तन** किये गये।

ब्राह्मण्य देव मंदिर, उन्नाव (मध्य प्रदेश)

- **दतिया के राजा** द्वारा प्रागैतिहासिक काल में **निर्मित।**
- मंदिर में **इक्कीस त्रिकोण की नक्काशी** है, जो सूर्य के **21 चरणों का प्रतिनिधित्व** करती है।
- मंदिर के नीचे **पहूज नदी बहती** है।
- **पहूज नदी** के पानी में पाया जाने वाला **सल्फर तत्व चर्म रोगों के उपचार में सहायक** होता है।

पहाड़ियों में मंदिर की वास्तुकला

- **कुमाऊं, गढ़वाल, हिमाचल** और **कश्मीर** की **पहाड़ियों** में; वास्तुकला का एक **अनूठा रूप** विकसित हुआ।
- कश्मीर गांधार क्षेत्रों (तक्षशिला, पेशावर, आदि) के करीब होने के कारण 5 वीं शताब्दी ईसवी तक **गांधार शैली से** काफी **प्रभावित** था।